पश्चाताप - 5

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ वर्तमान समय भोलेपन के कारण माया का गोला ज्यादा लग रहा है। ऐसा शक्ति स्वरुप बनना है जो माया सामना करने के पहले ही नमस्कार कर ले, सामना कर न पावे। बहुत सावधान, खबरदार-होशियार रहना है।

➳ _ ➳ अपनी वृति और वायुमण्डल को चेक करो। अपने आपको देखो कि कोई भी वायुमण्डल अपनी वृति को कमजोर तो नहीं करता है? कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन स्वयं की शक्तिशाली वृति वायुमण्डल को परिवर्तन में ला सकती है। अगर वायुमण्डल का वृति के ऊपर असर आ जाता है तो यही भोलापन है। ऐसे भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो ठीक हूँ लेकिन वायुमण्डल का असर आ गया। नहीं। कैसा भी वायुमण्डल विकारी हो लेकिन स्वयं की वृति निर्विकारी होनी चाहिए।

➳ _ ➳ जब कहती हो-हम पतित-पावनियां हैं, पतितों को पावन बनाने वाली हैं, जब आत्माओं को पावन बना सकती हो तो क्या वायुमण्डल को पतित से पावन नहीं बना सकती? पावन बनाने वाले वायुमण्डल के वशीभूत नहीं होते। लेकिन वायुमण्डल वृति के ऊपर प्रभाव डाल देता है, यह है कमजोरी।

➳ _ ➳ हरेक को ऐसा समझना चाहिए कि मुझे स्वयं अपने पावरफुल वृति से जो भी अपवित्र वा कमजोरी का वायुमण्डल है उसको मिटाना है। तुम मिटाने वाले हो, न कि वश होने वाले।

➳ _ ➳ कोई पतित वायुमण्डल का वर्णन भी नहीं करना चाहिए। वर्णन किया तो जैसे कहावत है ना -पाप को देखने वाले पर भी पाप होता है। अगर कोई भी कमजोर वा पतित वायुमण्डल का वर्णन भी करते हैं तो यह भी पाप है। क्योंकि उस समय बाप को भूल जाते हैं। जहां बाप भूल जाता है वहां पाप जरुर होता है। बाप की याद होगी तो पाप नहीं हो सकता। इसलिए वर्णन भी नहीं करना चाहिए।

➳ _ ➳ जबकि बाप का फरमान है तो मुख से सिवाए ज्ञान रत्नों के और कोई एक शब्द भी व्यर्थ नहीं निकलना चाहिए। वायुमण्डल का वर्णन करना-यह भी व्यर्थ हुआ ना। जहां व्यर्थ है वहां समर्थ की स्मृति नहीं।
(10.05.1972)

➢➢ वृत्ति

➳ _ ➳ Attitude + Point Of View + Perspective

➳ _ ➳ संकल्प से ही वृत्ति उत्पन्न होती है

→ संकल्प से ही तरंगे (वाइब्रेशन) निकलती है

→ और फिर वैसी ही घटनाओं का निर्माण होता है

→ Train Your Sub Conscious Mind

- यह मत सोचो की :- “मुझे फ़रिश्ता बनना है”
- बल्कि यह सोचो की :- “मैं फ़रिश्ता हूँ”
- बल्कि यह सोचो की :- “मैं विजयी हूँ”

- अपने अंतर्मन को स्वीकार करवा दो की “आप ये हो”

➢➢ व्यर्थ का वर्णन नहीं

➳ _ ➳ नारद की भूमिका नहीं निभानी

→ **Double Standards नहीं रखने हैं**

- सबसे ज्यादा भक्ति भी नारद ही करता था... सबसे ज्यादा नारायण... नारायण करता था ...
- पर सबसे ज्यादा गड़बड़ भी नारायण ही फैलाता था
- **इधर की बातें उधर नहीं करनी है**

➳ _ ➳ मुख से सिर्फ ज्ञान रतन निकलें

➳ _ ➳ राम ने ककेयी को एक बार भी दोष नहीं दिया